वुल्फर्ल

वुल्फगांग एमीडियस मोत्ज़ार्ट

के जीवन के पहले छह वर्ष

(1756 – 1762)

लेखन व चित्रांकन: लैसल वाइल

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

वुल्फर्ल

वुल्फगांग एमीडियस मोत्ज़ार्ट

के जीवन के पहले छह वर्ष

(1756 – 1762)

लेखन व चित्रांकन: लैसल वाइल

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
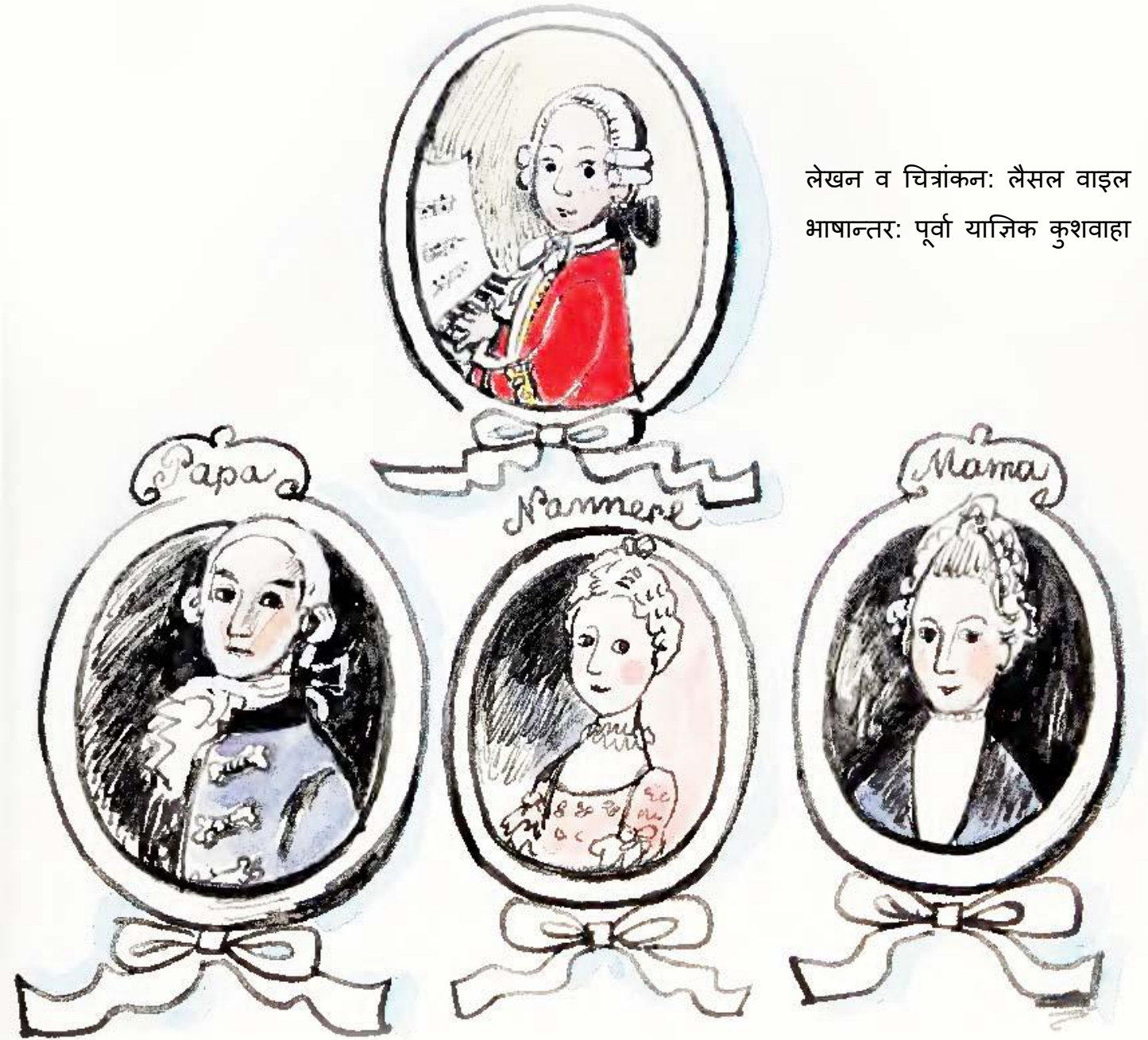
थॉमस और टिम के लिए स्नेह के साथ

परवरदीगार ने साल्ज़बर्ग में एक करिश्मा रौशन किया है...और अगर दुनिया को इस करिश्मे पर यक़ीन दिलाना मेरी ज़िम्मेदारी होती, तो ठीक अब ही इसका समय है, जब लोग सभी करिश्मों का मखौल उड़ाते हैं, उन्हें सिरे से ख़ारिज करते हैं।

- लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट, 30 जुलाई 1969,
लॉरेन्ज़ हागेनावर को लिखे पत्र में।

25 जनवरी 1756, इतवार की एक सर्द शाम साल्ज़बर्ग, ऑस्ट्रिया में एक शिशु का जन्म हुआ। उसके माता-पिता बेहद खुश थे। उन्होंने इस नियामत के लिए खुदा का शुक्र किया। यह शिशु उनकी सातवीं सन्तान थी, पर ज़िन्दा बचे रहने वाला यह दूसरा ही बच्चा था।
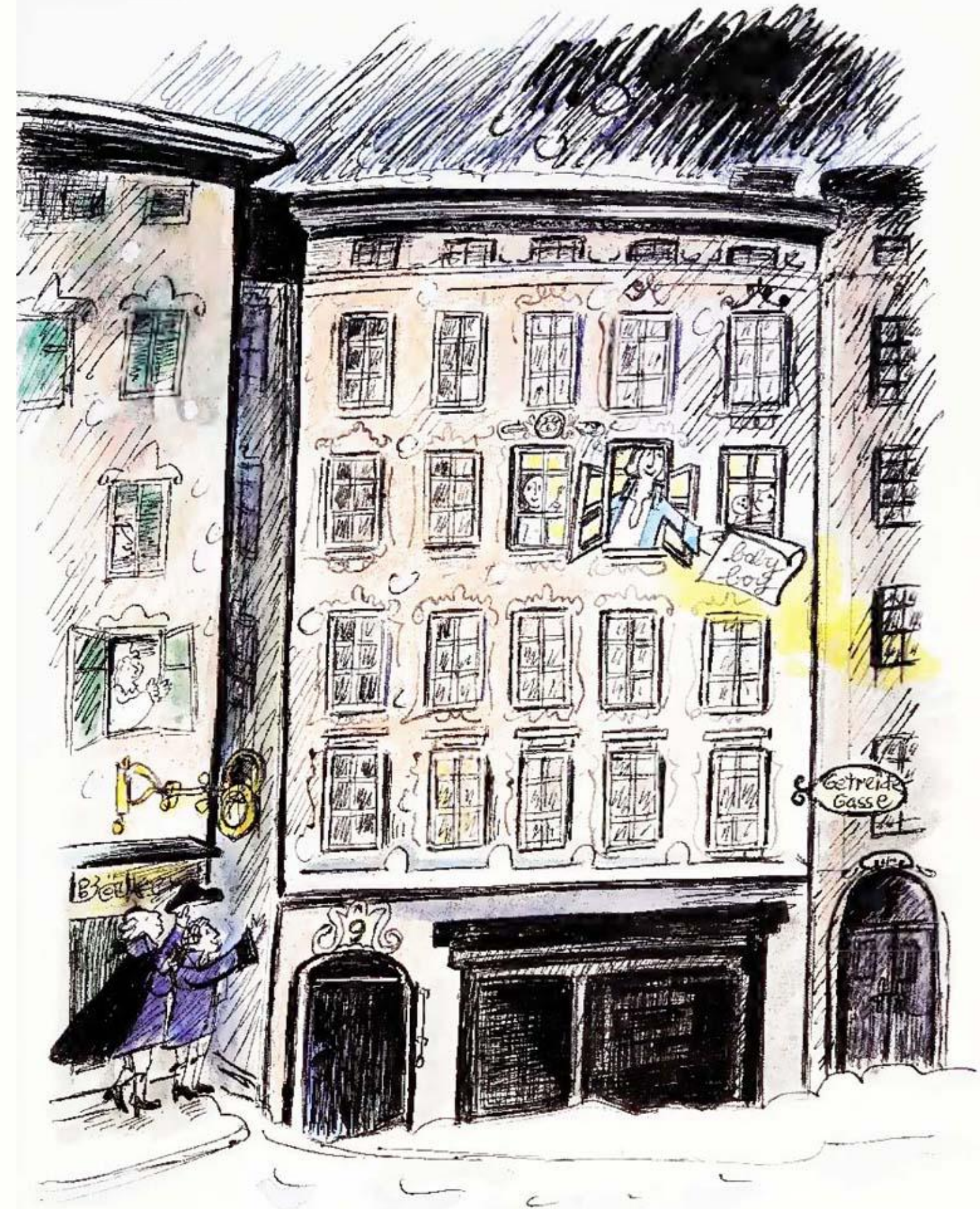
प्रसन्न माता-पिता ने शिशु का नाम योहानस क्रिसॉस्टमस वुल्फगांगस थिओफिलिस मोत्ज़ार्ट रखा। एक नन्हे-से शिशु का इतना बड़ा-सा नाम! पर शिशु की साढ़े चार साल की बड़ी बहन नैनर्ल उसे सिर्फ वुल्फर्ल कहा करती थी। सो माता-पिता भी उसे इसी नाम से पुकारने लगे।

वुल्फर्ल उस समय में बड़ा हो रहा था जब ऑस्ट्रिया एक शानदार और अमीर देश था। उसके बेहतरीन शहर विएना में साम्राज्ञी मारिया थरेसा राज करती थी।

वुल्फर्ल के पिता लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट, साल्ज़बर्ग के 'प्रिंस-आर्चबिशप (शासक धर्माधिकारी) सिग्समंड के दरबार में मुख्य संगीतकार थे। साथ ही वे दरबार के सहायक संगीत निर्देशक भी थे। इस हैसियत से वे सभी गिरजाघरों, प्रार्थना स्थलों, उत्सवों और नृत्य सभाओं के लिए सही संगीत भी चुनते थे। हालांकि लियोपोल्ड आर्चबिशप के लिए काम करते थे, उनकी आय अधिक नहीं थी। सो गुज़ारा चलाने के लिए वे संगीत सिखाते थे।

घर आने वाले छात्रों को संगीत सिखाने के अलावा पापा मोत्ज़ार्ट अपनी बेटी नैनर्ल को भी क्लावियर (पियोना जैसा वाद्य) और वायलिन बजाना सिखाते थे।

मोत्ज़ार्ट परिवार के घर में हमेशा संगीत की ध्वनियाँ गूँजा करती थीं। वुल्फर्ल जब अपने पालने में ही था, तब से वह संगीत सुना करता था। जब उसने चलने के लिए पहले कदम धरे, तब भी वह संगीत सुना करता था, तब कुछ बड़े होने पर पैरों के उंगलियों के बल उचक वह क्लावियर को छूने लगा। इतना प्यार था नन्हे वुल्फर्ल को संगीत से!

जब वह तीन बरस का हुआ वह किसी भी धुन को कान से सुन कर दोहरा सकता था। मतलब वह किसीको कुछ बजाते सुनता तो वह उसे जस का तस बजा पाता, उसे पहले अभ्यास करने की ज़रूरत न पड़ती।

जब नैनर्ल वायलिन बजाती वुल्फर्ल उसकी संगत कर सकता था। उसके माता-पिता को अचरज होता कि वह नन्हा इतना अच्छा बजा सकता है।
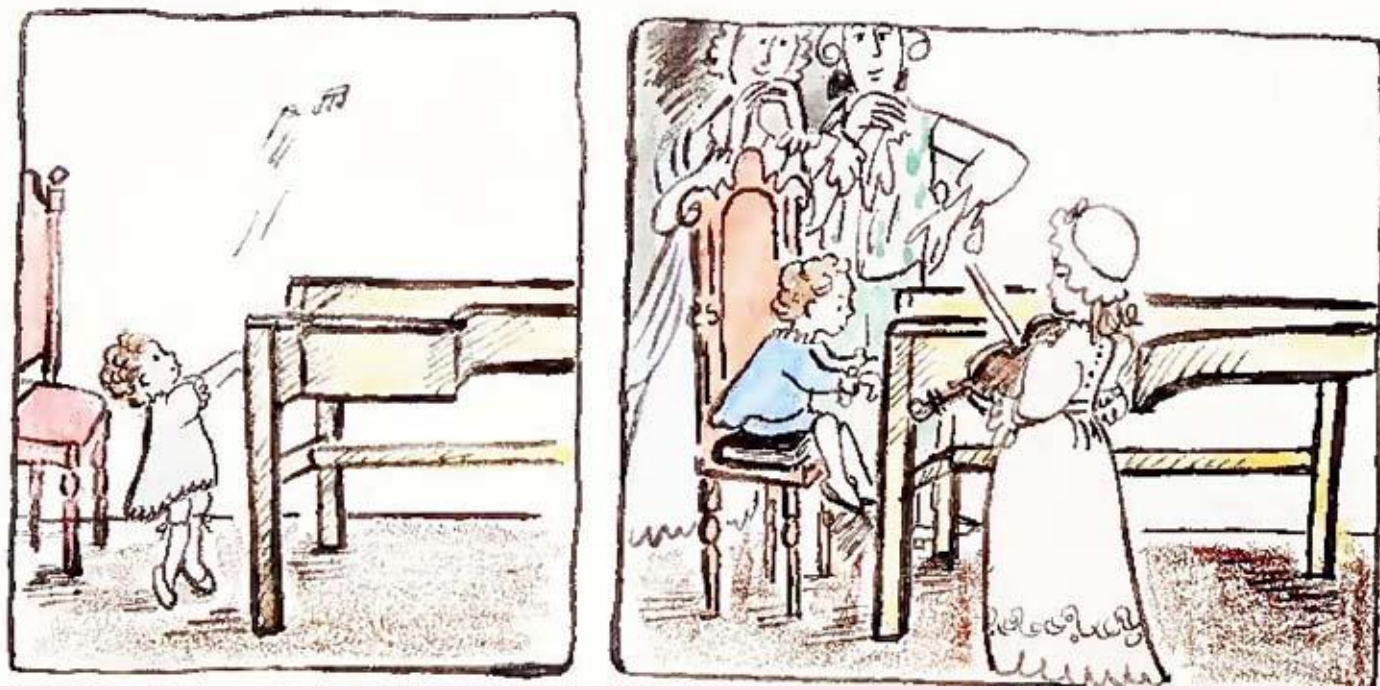
एक दिन पापा के संगीतकार दोस्त घर पर संगीत-गोष्ठी की तैयारी कर रहे थे। नन्हा वुल्फर्ल, अपनी वायलिन पकड़े कमरे में घुसा।

"मुझे भी साथ बजाने दीजिए। मेहरबानी से, पापा।"

पहले तो पिता ने इन्कार किया, पर वुल्फर्ल चिरौरी करता रहा। आख़िर पापा मान गए।

इस बात से सभी हैरत में पड़ गए जब वुल्फर्ल ने वायलिन पर बिलकुल सटीक बजाया।

जब वुल्फर्ल संगीत बजाता होता तो वह बड़ी शाइस्तगी से पेश आता था। पर बाकी समय वह खूब शैतानियाँ करता। उसे नैनर्ल को छेड़ना पसन्द था। कभी तो वह भूत बन कर बहन को डराता था।

वुल्फर्ल क़रीब चार साल का रहा होगा कि उसने अपनी धुनें बनानी शुरू कर दीं। वे मधुर छोटी धुनें होती थीं। पापा उन्हें अपनी कॉपी में उन्हें उतार लेते। तब ममा और पापा सोचने लगे कि "ईश्वर हमारे बच्चे के साथ हर दिन करिश्मा करता है।"
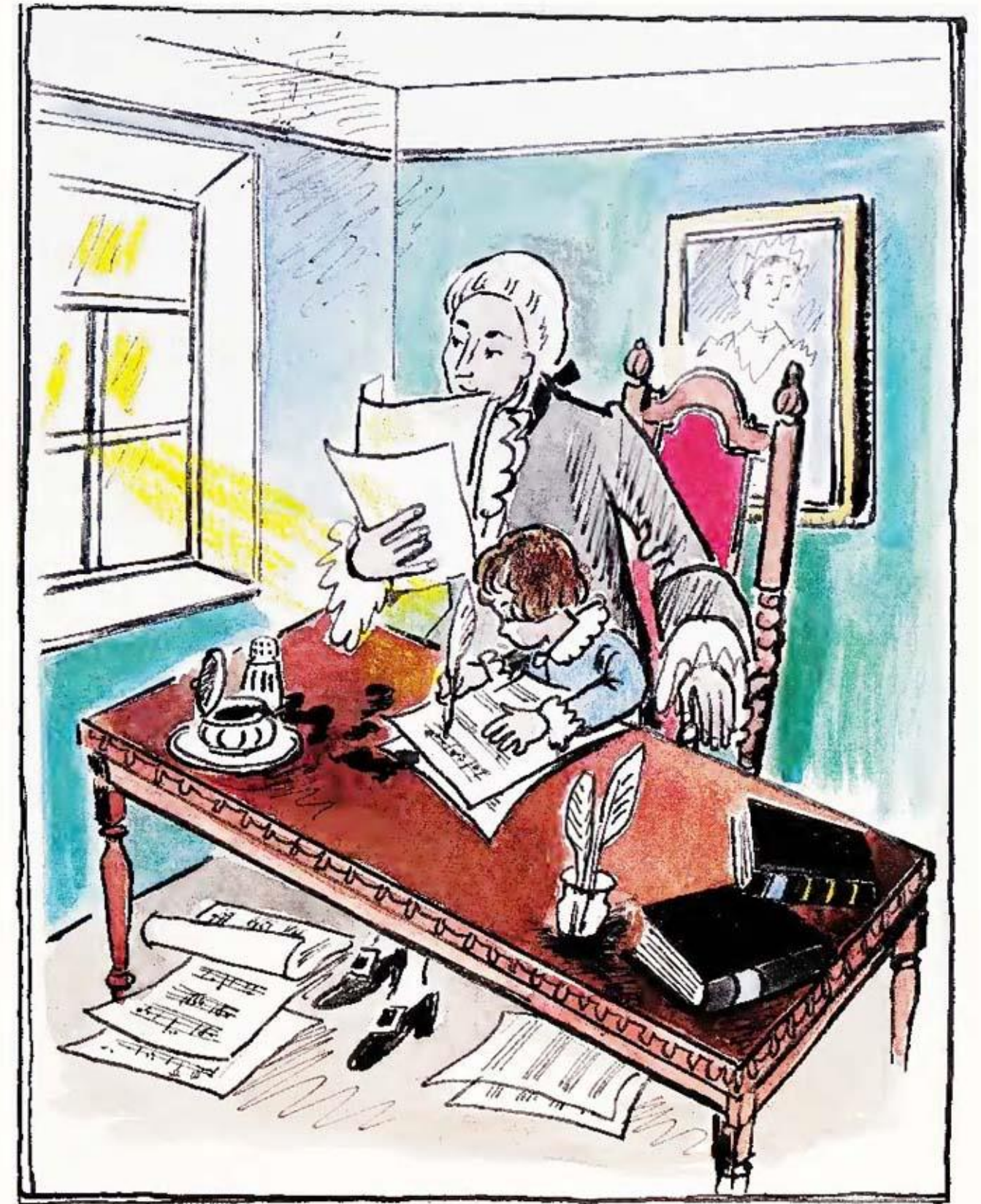
पापा मोत्ज़ार्ट ने तय किया कि वुल्फर्ल को संगीत लिखना और उसे पढ़ना सिखाने का, साज़ कैसे काम करते हैं यह जान लेने का वक़्त आ गया है।

वुल्फर्ल ने यह सब बड़ी ही सहजता से सीख लिया। ठीक वैसे जैसे चिड़िया उड़ना सीखती है।
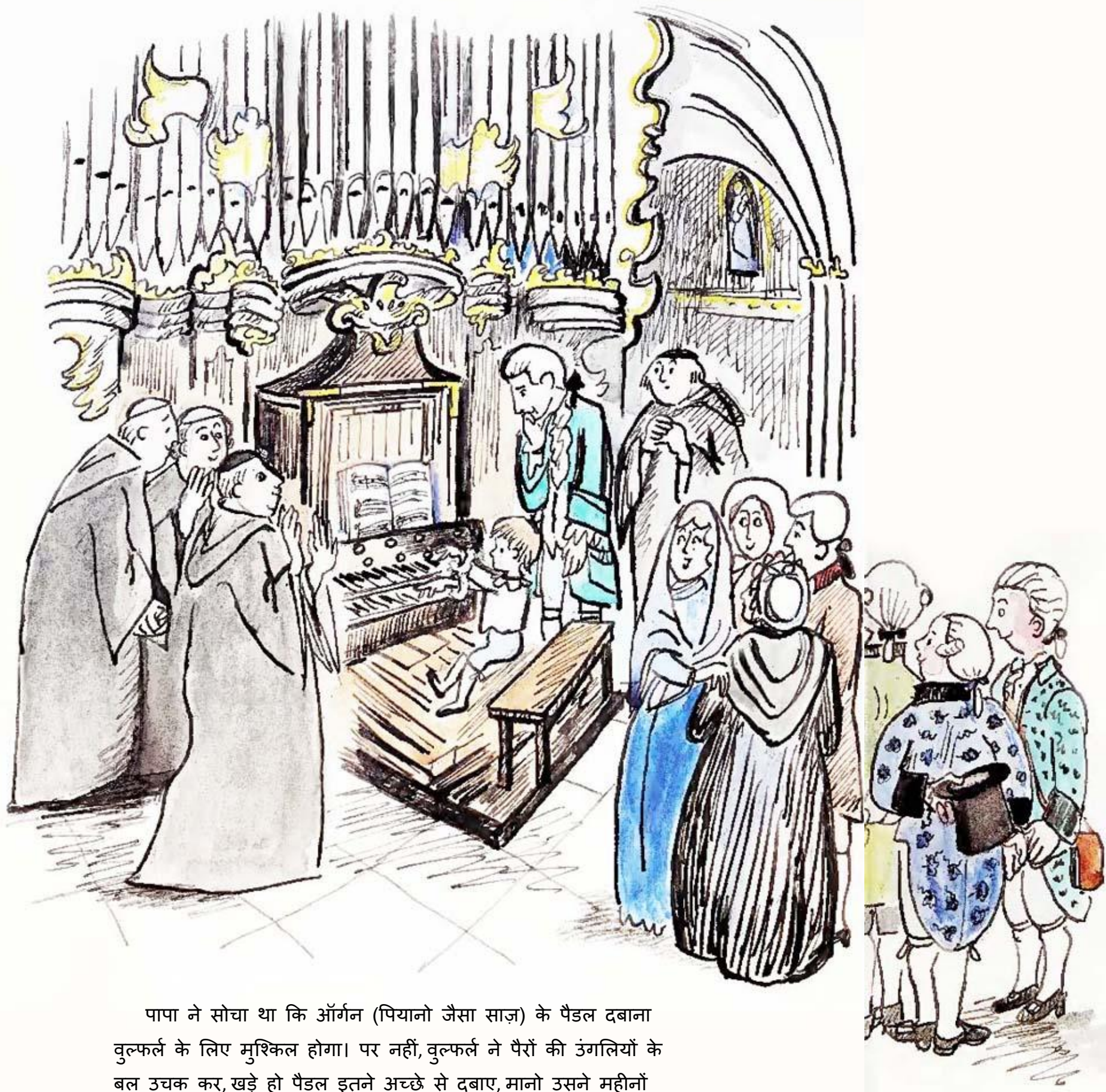
पापा ने सोचा था कि ऑर्गन (पियानो जैसा साज़) के पैडल दबाना वुल्फर्ल के लिए मुश्किल होगा। पर नहीं, वुल्फर्ल ने पैरों की उंगलियों के बल उचक कर, खड़े हो पैडल इतने अच्छे से दबाए, मानो उसने महीनों तक ऐसा करने का अभ्यास किया हो। साल्ज़बर्ग के लोग हुनरमन्द मोत्ज़ार्ट बच्चों की बातें करने लगे। वे ख़ास तौर से वुल्फर्ल पर फ़िदा थे, उस नन्हे पर जो अद्‌भुत धुनें रचता था।
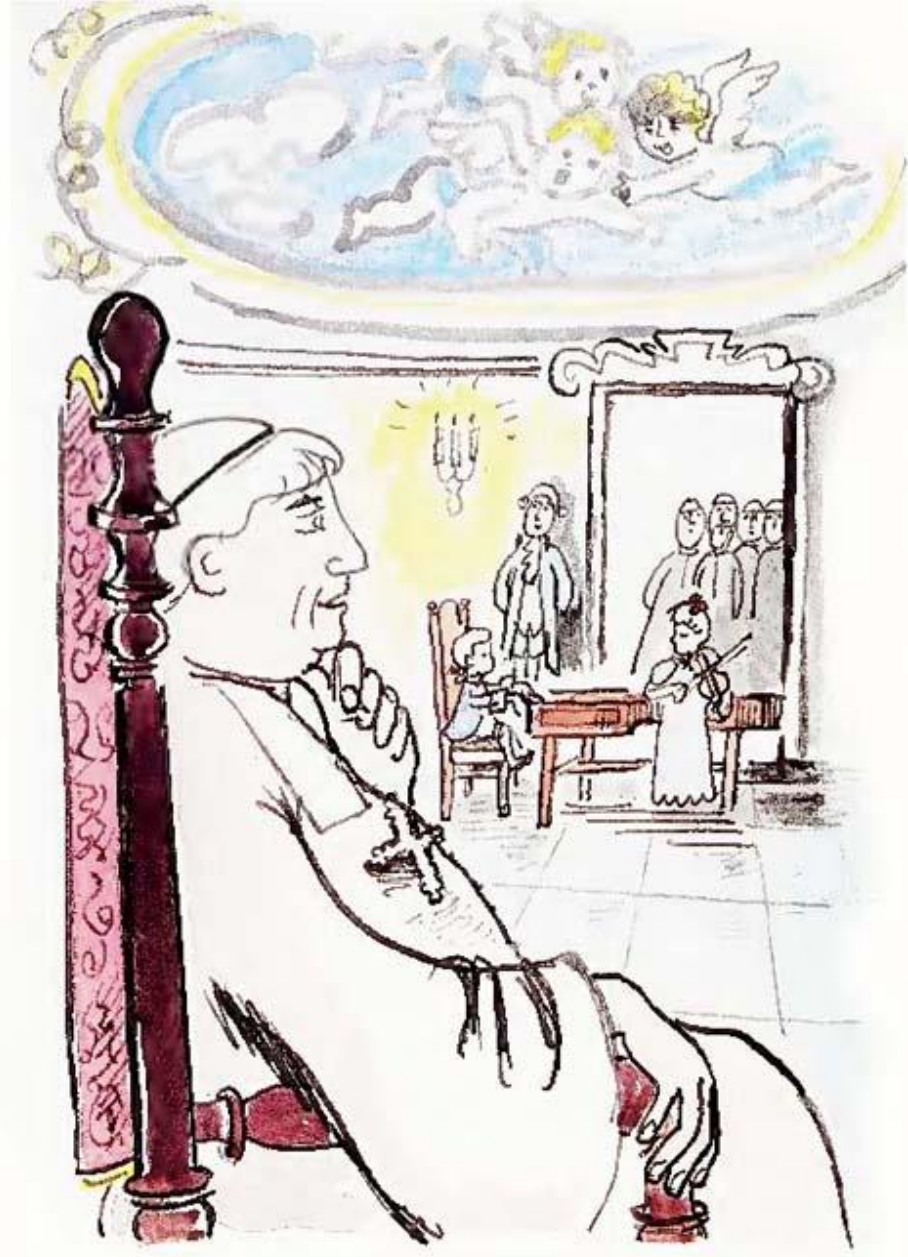
प्रिंस-आर्चबिशप सिग्समंड की जिज्ञासा भी जगी। उन्होंने मोत्ज़ार्ट बच्चों को अपने महल में प्रस्तुति देने बुलाया। आर्चबिशप एक सख्त इन्सान के रूप में जाने जाते थे, पर जब उन्होंने मोत्ज़ार्ट बच्चों का संगीत सुना वे मुग्ध हो गए। वुल्फर्ल की बनाई धुनें उन्हें फ़रिश्तों की आवाज़ों सरीखी लगीं।

जल्द ही साल्ज़बर्ग के सामन्त परिवार भी नैनर्ल और वुल्फर्ल को संगीत प्रस्तुतियों के लिए बुलाने लगे। पर पापा बच्चों को केवल कुछ ही सभाएं करने की छूट देते। वे चाहते थे कि वुल्फर्ल को अपना संगीत रचने और अभ्यास करने का समय मिले।

जिस दिन प्रस्तुति देनी होती ममा हड़बड़ाती हुई उन्हें तैयार करतीं। वे नैनर्ल से कहतीं, "अपने भाई का ख़याल रखना, उसे बहुत मीठा न खाने देना। देखना, कहीं उसके पैर बरसात या बर्फ़ में गीले न हो जाएं।"

बच्चों को लोगों के शानदार घरों में जाने में मज़ा आता। पापा जो आरामदेह बग्घियाँ किराए पर मंगवाते, उनमें सफ़र करना भी उन्हें अच्छा लगता।
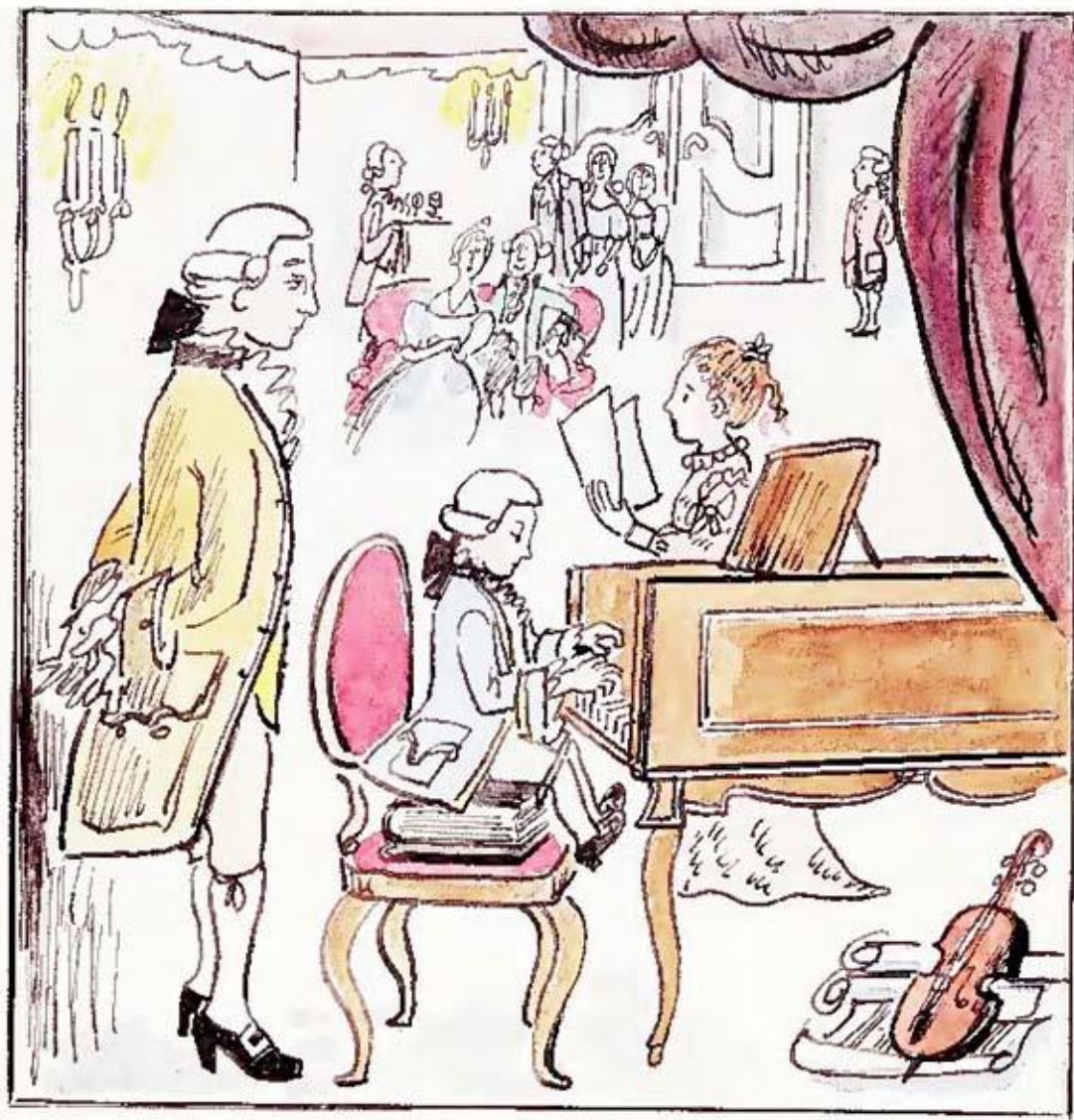
वुल्फर्ल और नैनर्ल तब खुश होते जब उनके संगीत की सुनने वाले तारीफ़ करते। और संगीत सभा के बाद जो खाना परोसा जाता, वे उसका भी मज़ा लेते। पापा भी खुश होते क्योंकि ये सामन्त बच्चों का संगीत सुनने के लिए पैसे देते थे। पापा मोत्ज़ार्ट की अपने बच्चों से ऊँचीं उम्मीदें थीं, बड़े सपने थे, खास कर वुल्फर्ल के लिए। और समय के साथ उनकी उम्मीदें और बड़ी होती गईं।
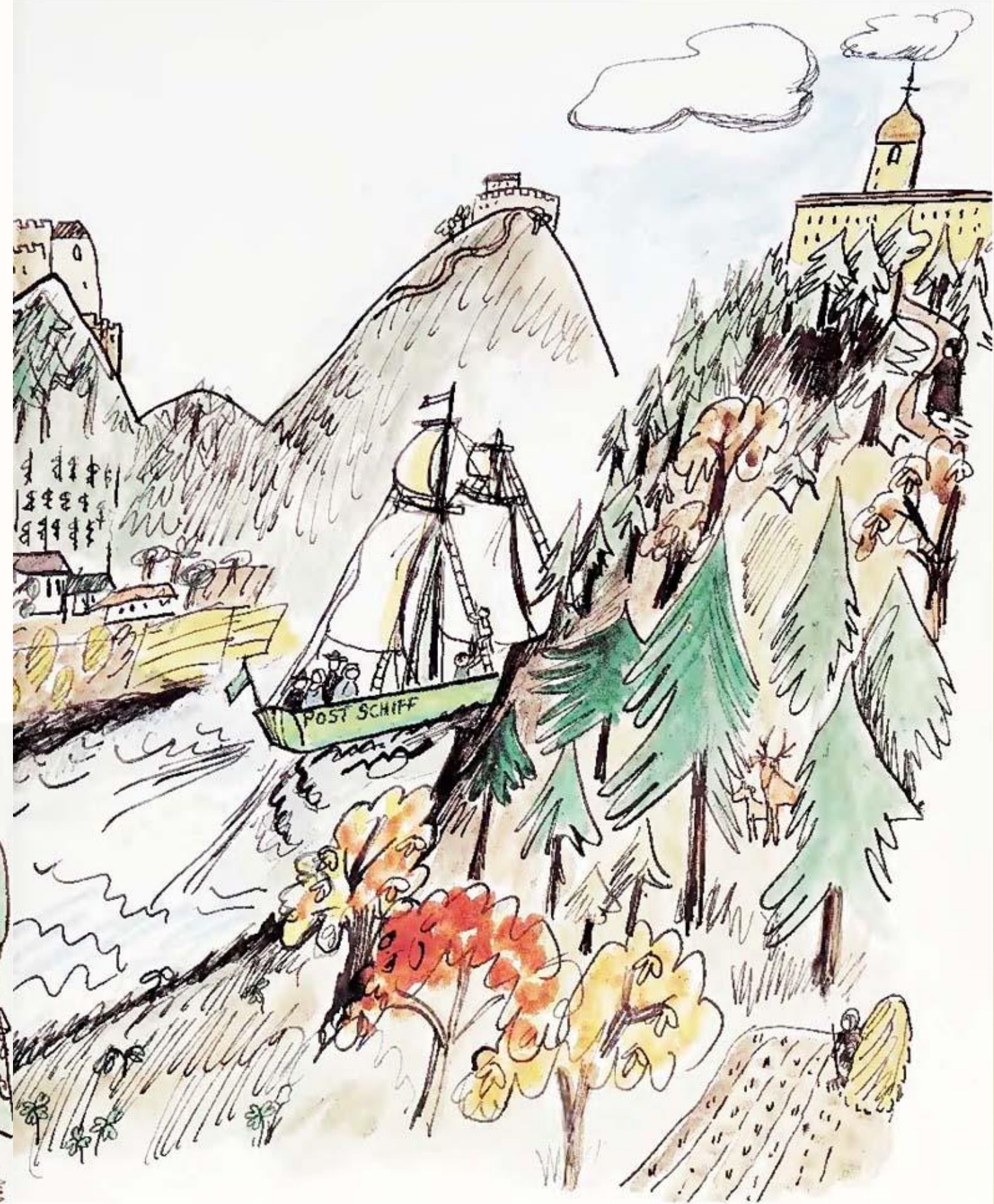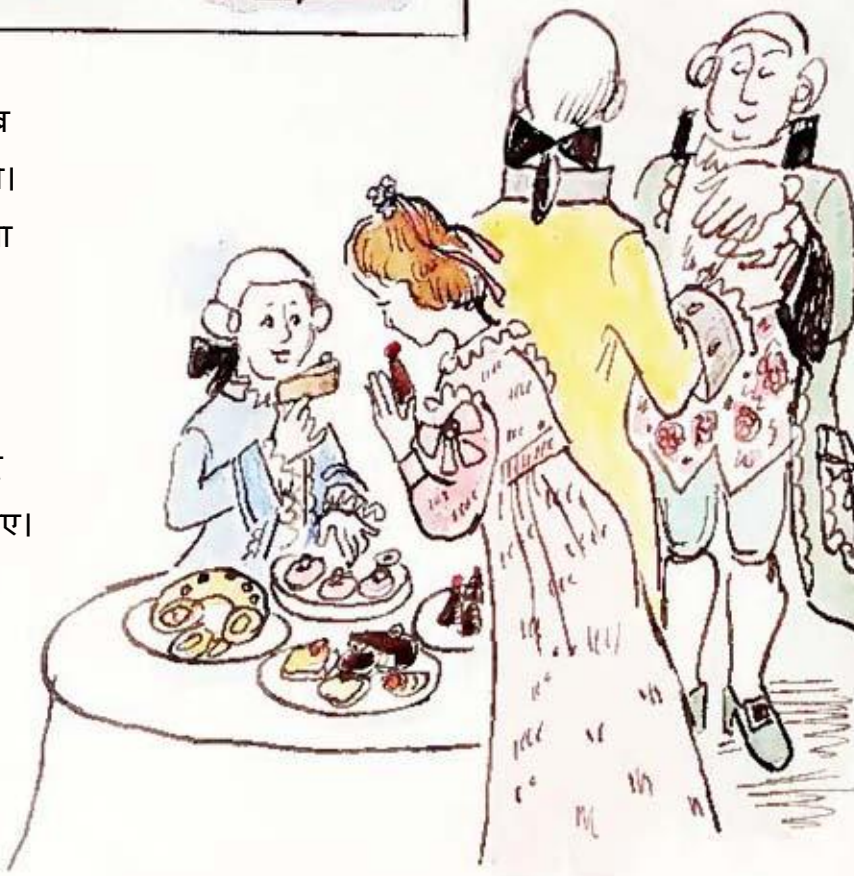
आखिरकार पापा ने पूरे परिवार को एक बड़ी यात्रा पर ले जाने की व्यवस्था की। 18 सितम्बर 1762 को पूरा परिवार विएना के लिए निकला। बच्चों को नाव से डैन्यूब नदी को पार करने में बड़ा ही मज़ा आया।

जल्द ही वुल्फर्ल और नैनर्ल विएना की भी सनसनी बन गए। हर जगह लोग उनके संगीत की चर्चा करने लगे। ख़ास तौर से उस "विलक्षण नन्हे मोत्ज़ार्ट" की धुनों की। तब एक दिन पापा मोत्ज़ार्ट का सपना हक़ीकत में बदल गया। साम्राज्ञी मारिया थरेसा की ओर से ख़ास बुलावा आया। उन्होंने बच्चों को अपने परिवार के लिए संगीत प्रस्तुति देने श्योनब्रुन महल में आमंत्रित किया। संगीत सभा मे पहनने के लिए उन्होंने दो दरबारी पोशाकें भी भेजीं।

वुल्फर्ल की पोशाक बेहतरीन हल्के बैंगनी कपड़े से बनी थी जिसमें सुनहरा गोटा और बटन लगे थे।

नैनर्ल की पोशाक सफेद ज़रीदार टैफेटा की थी जिस पर हल्के बैंगनी और गुलाबी फूल बने थे।

प्रस्तुति की सुबह ममा ने नैनर्ल को घुटने झुका अभिवादन करने का अभ्यास करवाया। और वुल्फर्ल को झुक कर सलाम करने का अभ्यास करवाया। अब वे साम्राज़ी के सामने हाज़िर होने को तैयार थे।
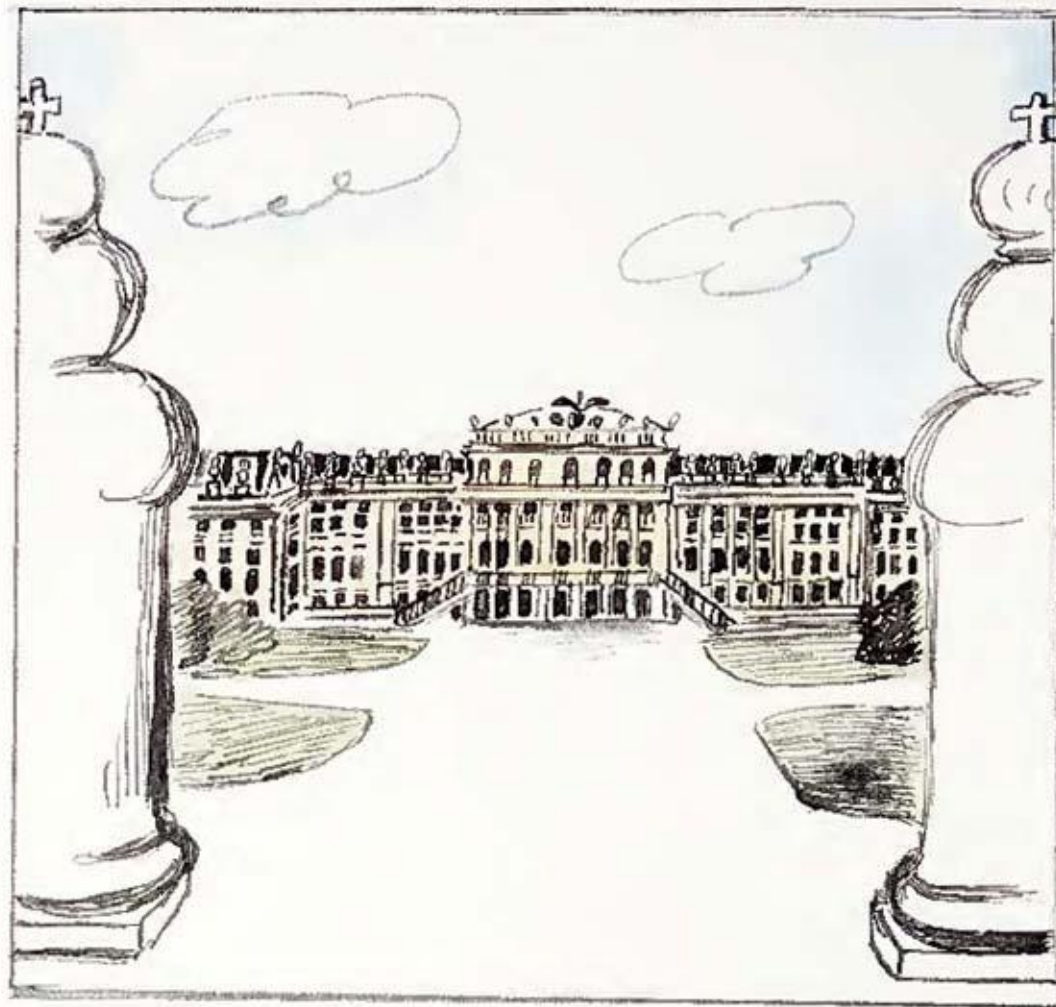
नैनर्ल और वुल्फर्ल ने साम्राज़ी के एक निजी कक्ष में प्रस्तुति दी। मारिया थरेसा, उनके पति फ्रांसिस प्रथम और उनके परिवार ने दोनों बच्चों को सुना। "बच्चों का संगीत बेहद सुन्दर है," संगीत खत्म होने पर साम्राज़ी ने कहा।

और तब ऐसा कुछ घटा जिसकी किसीने कल्पना तक नहीं की थी!

वुल्फर्ल सब कुछ अच्छे से निपट जाने पर इतना खुश हुआ कि वह साम्राज्ञी की ओर दौड़ा, उनकी गोद में चढ़ा और उन्हें चूम लिया! साम्राज्ञी इससे नाराज़ नहीं हुई। उन्हें बच्चों की आदत जो थी। आख़िर उन्होंने खुद सोलह बच्चे जने थे! "वुल्फगांग एमीडियस कितना प्यारा और प्रतिभाशाली बच्चा है," वे बोलीं। "इतनी प्रतिभा इतने नन्हे से लड़के में!" और फ्रांसिस प्रथम ने उसे "नन्हा जादूगर," कहा।

वुल्फर्ल और नैनर्ल को अक्सर श्योनब्रुन महल में संगीत सुनाने का न्यौता मिलता। हर प्रस्तुति के बाद वे महल के बच्चों की दावत में जाते। वहाँ उन्हें क्युगलहुप्फ खाने को मिलता, जो ऑस्ट्रिया का ख़ास किशमिश वाला केक था, और मिलता चॉकलेट टार्ट, जिस पर फिटी हुई मलाई होती। खाने के बाद वे छुप्पम-छिपाई खेलते। एक बार छिपते समय वुल्फर्ल ठोकर खा गिर गया। तब एक छोटी-सी राजकुमारी ने उठने में उसकी मदद की। उस राजकुमारी का नाम मारी आन्टोनैट था, वह सात बरस की थी। "मैं बड़ा हो कर शायद उससे शादी करूँ," नन्हे वुल्फर्ल ने सोचा।
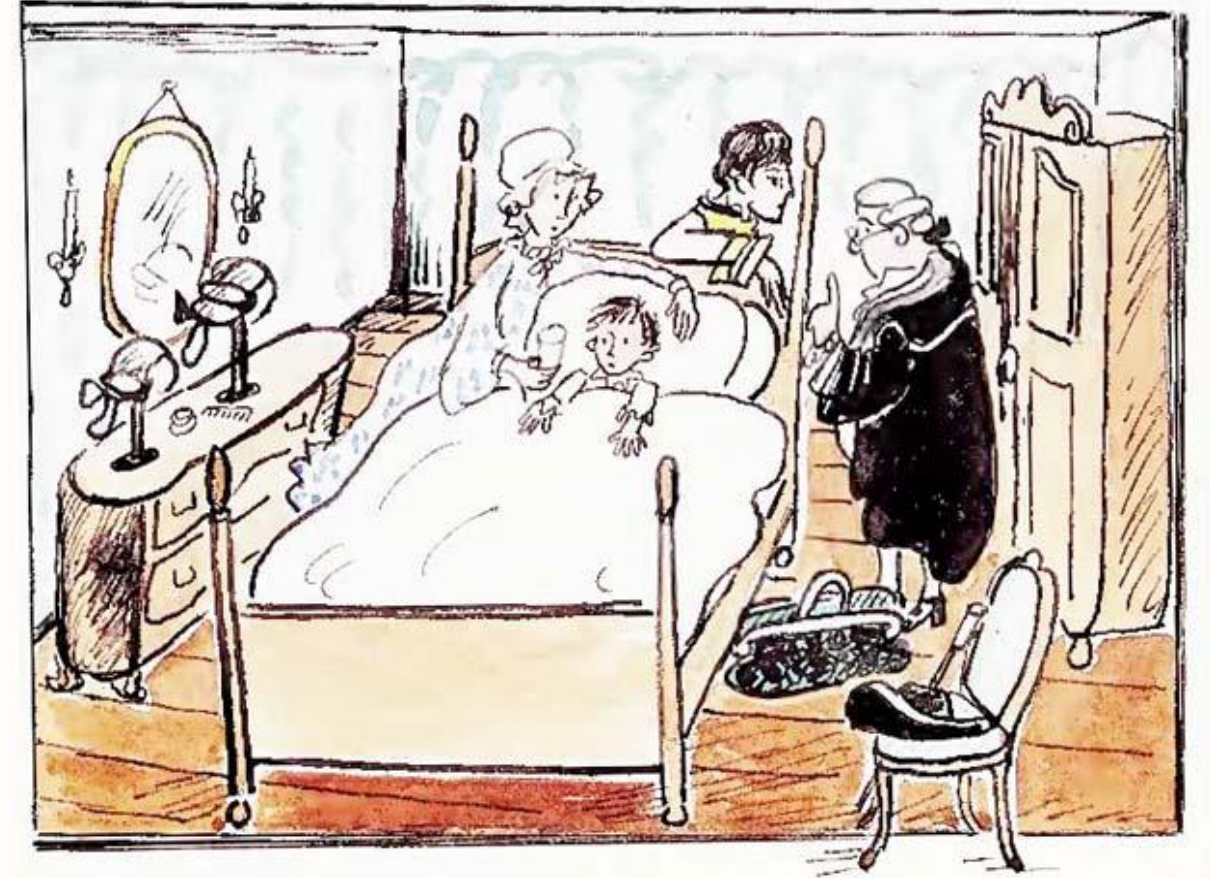
मोत्ज़ार्ट परिवार विएना में रहता रहा जहाँ नैनर्ल और वुल्फर्ल संगीत प्रस्तुतियाँ देते रहे।

तब बेहद ख़राब सर्द मौसम आया और लोगों को सर्दी-ज़ुकाम होने लगा।

श्योनब्रुन में एक और प्रस्तुति देने के बाद वुल्फर्ल को बुरी तरह ठंड लग गई। उसे तेज़ बुख़ार चढ़ा और पूरे शरीर पर चकत्ते उभर आए। यह 21 अक्तूबर का दिन था।

मरिया थेरेसा ने उसे तोहफ़े भेजे, और उन लोगों ने भी जो उसे सुन चुके थे। पर डॉक्टर के सिवा कोई मिलने नहीं आया। लोगों को डर था कि वुल्फर्ल की बीमारी कहीं उन्हें न लग जाए।

वुल्फर्ल को तकरीबन महीने भर बिस्तर में गुज़ारना पड़ा। आख़िरकार वह इतना ठीक हो गया कि सफ़र कर सके। मोत्ज़ार्ट परिवार 13 जनवरी 1763 में साल्ज़बर्ग, अपने घर लौटा।

कमज़ोर और थके वुल्फर्ल को दुख था कि विएना का अद्‌भुत वक़्त खत्म हो गया है। उसे लगा कि उसकी ज़िन्दगी में इतना बेहतरीन आगे कुछ नहीं होगा। पर बेशक हम अब उससे ज़्यादा जानते हैं...
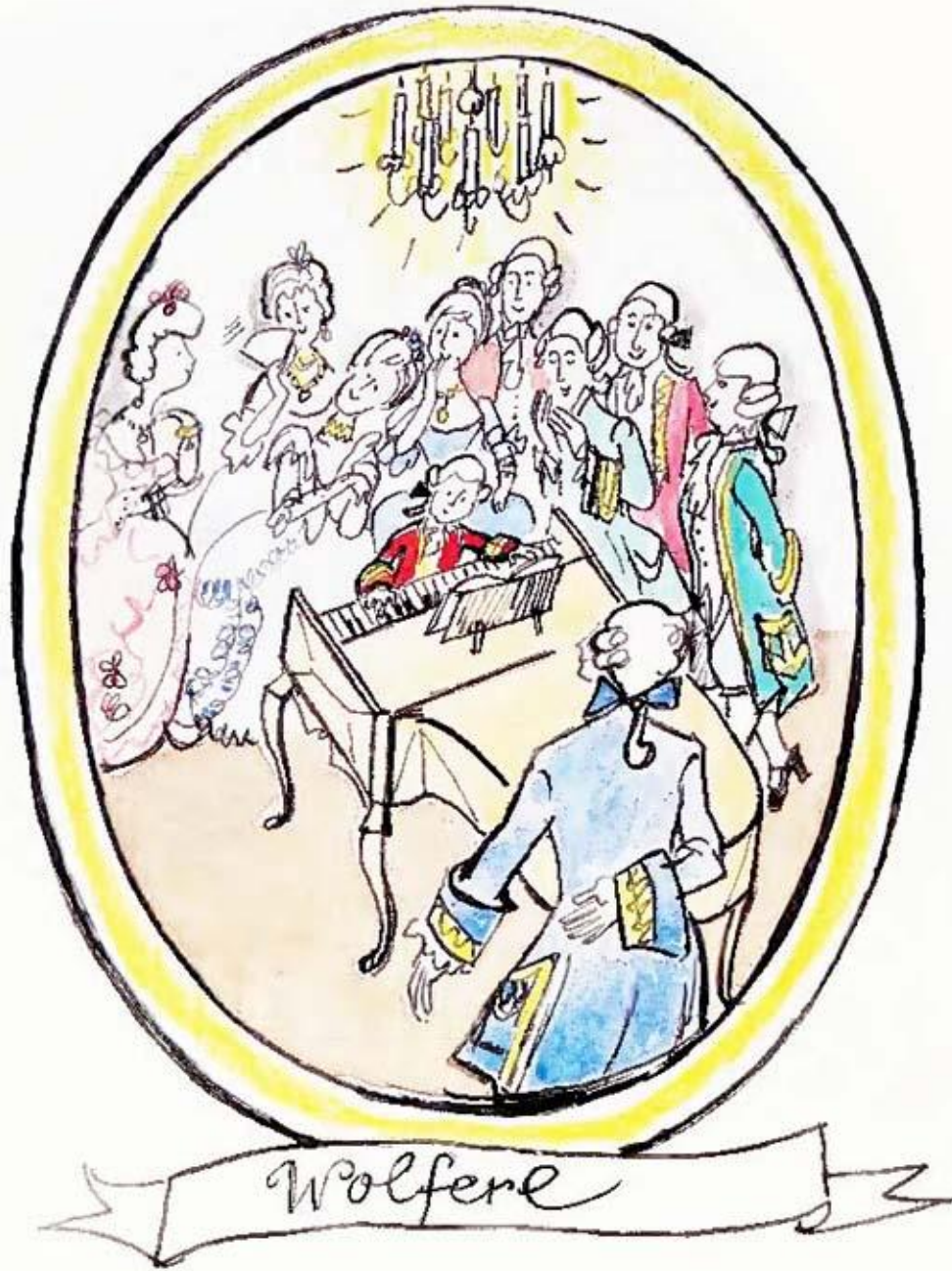
वुल्फर्ल आगे चल कर वुल्फगांग एमेडीयस मोत्ज़ार्ट नाम से जाना गया और दुनिया का सबसे महान और चहेता संगीतकार बना। अपने छोटे-से जीवन में मोत्ज़ार्ट ने अनेक कॉन्सेर्टो, सोनाटा, चेम्बर संगीत, सिम्फनियाँ, ऑपेरा, सिंगशपील, चर्च संगीत, कॉन्ट्रा नृत्य संगीत और डाइवर्टिमेंटिस (पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत के विविध प्रकार) रचे।

हालांकि बचपन में मोत्ज़ार्ट की प्रतिभा पहचानी गई, उसका जश्न मनाया गया, बड़े होने पर कई लोग उनसे जलने लगे। महज पैंतीस वर्ष उम्र में उनकी मौत हो गई। परिवार के चन्द लोगों और कुछ दोस्तों के सिवा कोई उनके जनाज़े तक में न आया। कोई कब्र तक उनके साथ न चला, जहाँ उन्हें एक मुफ़लिस की तरह दफनाया गया। पर उनका संगीत ज़िन्दा रहा और आज भी सभी जगह के लोग उसे बेहद पसन्द करते हैं।

27 जनवरी 1756 के दिन साल्ज़बर्ग, ऑस्ट्रिया में एक लड़के ने जन्म लिया। उसका नाम योहानस क्रिसॉस्टमस वुल्फगांगस थियोफिलिस मोत्ज़ार्ट रखा गया - एक नन्हे से शिशु का इतना बड़ा नाम! पर उसकी साढ़े चार साल की बड़ी बहन नैनर्ल, उसे वुल्फर्ल नाम से पुकारती थी।

क्योंकि उसके पिता आर्चबिशप के दरबार में संगीत निर्देशक थे, वुल्फर्ल संगीत के बीच पला-बढ़ा। तीन साल की उम्र में वह कान से सुन कर उस धुन को क्लाविएर (पियानो जैसा साज़) पर बजा लेता था। वह बहन के साथ संगत भी करने लगा और जल्द ही वह खुद अपनी धुनें भी बनाने लगा।

बच्चों की प्रतिभा को पहचान कर पिता लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट ने साल्ज़बर्ग के सामन्तों के परिवारों के सामने उनकी संगीत प्रस्तुतियाँ करवाईं। बच्चों की ख्याति फैली और आॅस्ट्रिया की साम्राज्ञी मारिया थेरेसा ने दोनों बच्चों को विएना में श्योनब्रुन महल में उन्हें प्रस्तुति देने बुलाया।

मोत्ज़ार्ट की मौत बेहद ग़रीबी में पैंतीस वर्ष की उम्र में ही हो गई। उन्होंने कई ऐसे लोगों को नाराज़ किया जो पहले उनके काम की प्रशंसा करते थे। पर उनका संगीत आज भी मशहूर है और तमाम लोग उसे पसन्द करते हैं।